

# MASTER IN HISTORY (MAH)

Term-End Examination December, 2024

## MHI-04: POLITICAL STRUCTURES IN INDIA

With PDF (PART-3)

LEARN IN EASY LANGUAGE WITH ME

For both medium students.

**Question: How did the establishment of railways help in the conquest and administration of India?**

**प्रश्न: भारतीय उपमहाद्वीप में रेलवे की स्थापना ने विजय और प्रशासन में कैसे मदद की?**

### Introduction:

The establishment of railways in India played a crucial role in both the conquest and the administration of the country by the British. Railways provided the British with the necessary infrastructure to strengthen their control over India, facilitate military movements, improve communication, and boost economic exploitation. It was a major tool used by the colonial government to maintain its dominance over the Indian subcontinent.

भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिशों द्वारा रेलवे की स्थापना ने विजय और प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रेलवे ने ब्रिटिशों को भारत पर अपने नियंत्रण को मजबूत करने, सैन्य संचालन को सुविधाजनक बनाने, संचार में सुधार लाने और आर्थिक शोषण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा प्रदान किया। यह उपनिवेशी सरकार द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए एक प्रमुख उपकरण था।

#### 1. Improved Communication and Connectivity (संचार और कनेक्टिविटी में सुधार)

The establishment of railways significantly improved communication and connectivity across India. It made it easier for the British to move troops, officials, and resources quickly to any part of the country, ensuring faster control and response in times of unrest or rebellion.

भारतीय रेलवे की स्थापना ने संचार और कनेक्टिविटी को काफी सुधार दिया। यह ब्रिटिशों के लिए सैनिकों, अधिकारियों और संसाधनों को देश के किसी भी हिस्से में जल्दी पहुंचाने में मददगार साबित हुआ, जिससे अशांति या विद्रोह के समय में त्वरित नियंत्रण और प्रतिक्रिया संभव हो सकी।

#### 2. Facilitated Troop Movement (सैन्य गतिविधियों में सहूलत)

Railways enabled the British to transport large numbers of troops across vast distances in a short period of time. This was crucial for quelling uprisings, such as the 1857 Sepoy Mutiny, and maintaining law and order throughout the country.

रेलवे ने ब्रिटिशों को बड़े पैमाने पर सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल्दी और आसानी से भेजने की सुविधा दी। यह 1857 के सिपाही विद्रोह जैसे विद्रोहों को दबाने और पूरे देश में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण था।

3. **Economic Exploitation and Resource Transfer (आर्थिक शोषण और संसाधनों का स्थानांतरण)**

Railways played a key role in the economic exploitation of India by facilitating the easy transfer of raw materials from the interior to ports for export. It helped the British in extracting India's resources and boosting their trade.

रेलवे ने भारत के आर्थिक शोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि इसने कच्चे माल को अंदरूनी इलाकों से बंदरगाहों तक निर्यात के लिए आसानी से पहुंचाने में मदद की। इससे ब्रिटिशों को भारत के संसाधनों का शोषण करने और उनके व्यापार को बढ़ावा देने में सहायता मिली।

4. **Strengthened British Administration (ब्रिटिश प्रशासन को मजबूत बनाना)**

With railways, the British were able to efficiently manage their administrative machinery across India. It helped in the timely transfer of administrative orders and resources to different parts of the country, ensuring smooth governance.

रेलवे के माध्यम से ब्रिटिशों ने भारत भर में अपनी प्रशासनिक मशीनरी को कुशलतापूर्वक संचालित किया। इसने प्रशासनिक आदेशों और संसाधनों के समय पर विभिन्न हिस्सों में पहुंचाने में मदद की, जिससे सुचारू शासन सुनिश्चित हुआ।

5. **Boosted British Military Control (ब्रिटिश सैन्य नियंत्रण को बढ़ावा देना)**

Railways allowed the British to establish a stronger military presence across the country, enabling them to suppress revolts and maintain control over different regions. The ease of transportation made it difficult for Indian forces to resist British dominance.

रेलवे ने ब्रिटिशों को पूरे देश में अपनी मजबूत सैन्य उपस्थिति स्थापित करने में मदद की, जिससे वे विद्रोहों को दबाने और विभिन्न क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने में सक्षम हुए। परिवहन की आसानी ने भारतीय सेनाओं के लिए ब्रिटिश प्रभुत्व का विरोध करना कठिन बना दिया।

**Question: Analyze the local administration under the Cholas with special reference to ur, nadu, Brahmadeya, and Nagaram.**

**प्रश्न: चोल साम्राज्य के अंतर्गत स्थानीय प्रशासन का विश्लेषण करें, विशेष रूप से उर, नाडू, ब्राह्मदेय और नगरम के संदर्भ में।**

**Introduction:**

The Chola dynasty, one of the most significant South Indian dynasties, established an efficient local administration system to govern their vast empire. This system was decentralized, with local administration carried out through various units like ur, nadu, Brahmadeya, and Nagaram. These units were crucial in managing the day-to-day affairs of the local population, taxation, land distribution, and maintaining law and order. The Chola administration ensured effective governance by involving local bodies in the administration and enabling them to function with considerable autonomy.

चोल वंश, जो दक्षिण भारत के सबसे महत्वपूर्ण वंशों में से एक था, ने अपने विशाल साम्राज्य का संचालन करने के लिए एक कुशल स्थानीय प्रशासन प्रणाली स्थापित की। यह प्रणाली विकेंद्रित थी, जिसमें स्थानीय प्रशासन विभिन्न इकाइयों जैसे उर, नाडू, ब्राह्मदेय और नगरम के माध्यम से किया जाता था। ये इकाइयाँ स्थानीय जनसंख्या के दिन-प्रतिदिन के मामलों, कराधान, भूमि वितरण और कानून व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। चोल प्रशासन ने स्थानीय निकायों को प्रशासन में शामिल करके और उन्हें पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान करके प्रभावी शासन सुनिश्चित किया।

#### 1. Ur (उर)

Ur was the smallest administrative unit under the Chola Empire, typically consisting of a village or a group of villages. It was primarily responsible for local governance, such as maintaining law and order, collecting taxes, and managing land affairs. The ur was managed by a local assembly, known as the *ur sabha*, which consisted of village elders.

उर चोल साम्राज्य के तहत सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई थी, जो सामान्यतः एक गाँव या गाँवों के समूह के रूप में होती थी। यह मुख्य रूप से स्थानीय शासन के लिए जिम्मेदार था, जैसे कानून और व्यवस्था बनाए रखना, कर वसूलना, और भूमि मामलों का प्रबंधन करना। उर का संचालन एक स्थानीय सभा, जिसे *उर सभा* कहा जाता था, करती थी, जिसमें गाँव के बुजुर्ग शामिल होते थे।

#### 2. Nadu (नाडू)

Nadu was a larger administrative unit, usually consisting of a group of villages. It played a significant role in revenue collection, judicial functions, and local administration. The head of the nadu was called the *naduvazhi*, who supervised the functioning of local assemblies like the *nadu sabha* and coordinated the collection of taxes.

नाडू एक बड़ी प्रशासनिक इकाई थी, जो सामान्यतः गाँवों के समूह से बनी होती थी। इसका राजस्व वसूलने, न्यायिक कार्यों और स्थानीय प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। नाडू का प्रमुख *नाडुवाझी* कहलाता था, जो स्थानीय सभाओं जैसे *नाडू सभा* के कार्यों की निगरानी करता था और कर वसूलने का समन्वय करता था।

#### 3. Brahmadeya (ब्राह्मदेय)

Brahmadeya referred to land grants made to Brahmins, which were exempted from taxes. These lands were managed by the Brahmin community, and the administration of these lands was typically handled by the local assemblies. Brahmadeyas were important in the Chola administration as they played a role in local governance, economic activities, and religious affairs.

ब्राह्मदेय उन भूमि अनुदानों को कहा जाता था जो ब्राह्मणों को दिए जाते थे और जिन्हें करों से मुक्त रखा जाता था। इन भूमि का प्रबंधन ब्राह्मण समुदाय द्वारा किया जाता था, और इन भूमि का प्रशासन सामान्यतः स्थानीय सभाओं द्वारा किया जाता था। ब्राह्मदेय चोल प्रशासन में महत्वपूर्ण थे क्योंकि ये स्थानीय शासन, आर्थिक गतिविधियों और धार्मिक मामलों में भूमिका निभाते थे।

#### 4. Nagaram (नगरम)

Nagaram was the administrative unit corresponding to towns and cities. These were urban centers that were involved in trade, commerce, and craft production. The Nagaram was governed by a local council, which consisted of town leaders, merchants, and other influential people. It played an important role in maintaining order, controlling trade, and managing the economic activities of the region.

नगरम वह प्रशासनिक इकाई थी जो नगरों और शहरों से संबंधित थी। ये शहरी केंद्र थे जो

व्यापार, वाणिज्य और कारीगरी उत्पादन में शामिल होते थे। नगरम का संचालन एक स्थानीय परिषद करती थी, जिसमें नगर के नेता, व्यापारी और अन्य प्रभावशाली लोग शामिल होते थे। यह क्षेत्र की व्यवस्था बनाए रखने, व्यापार पर नियंत्रण और आर्थिक गतिविधियों का प्रबंधन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

The Chola Empire's local administration system, with its efficient use of ur, nadu, Brahmadeya, and Nagaram, played a crucial role in the governance of the empire. These administrative units helped maintain law and order, collect taxes, manage resources, and ensure that the local population's needs were met. The decentralized system allowed local bodies considerable autonomy while maintaining central control, making the Chola administration one of the most effective in Indian history.

चोल साम्राज्य की स्थानीय प्रशासन प्रणाली, जिसमें उर, नाडू, ब्राह्मदेय और नगरम का कुशल उपयोग किया गया, साम्राज्य के शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। इन प्रशासनिक इकाइयों ने कानून और व्यवस्था बनाए रखने, कर वसूलने, संसाधनों का प्रबंधन करने और स्थानीय जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद की। विकेंद्रीकृत प्रणाली ने स्थानीय निकायों को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान की, जबकि केंद्रीय नियंत्रण बनाए रखा, जिससे चोल प्रशासन भारतीय इतिहास में सबसे प्रभावी बन गया।

**Question: Examine the education policy of the colonial state.**

**प्रश्न: उपनिवेशी राज्य की शिक्षा नीति का विश्लेषण करें।**

**Introduction:**

The education policy of the British colonial state in India was primarily designed to serve their interests rather than the needs of the Indian population. The British sought to create a class of educated Indians who would serve as intermediaries between the rulers and the ruled. The education system was influenced by the British goal of spreading English language and Western-style education, but it largely neglected the traditional Indian educational systems and local needs. The colonial education policy played a significant role in shaping the social, political, and cultural landscape of India, with both positive and negative outcomes.

ब्रिटिश उपनिवेशी राज्य की शिक्षा नीति मुख्य रूप से भारतीय जनता की आवश्यकताओं के बजाय उनके अपने हितों को पूरा करने के लिए बनाई गई थी। ब्रिटिशों का उद्देश्य एक ऐसे शिक्षित भारतीय वर्ग का निर्माण करना था जो शासकों और शासितों के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करता। शिक्षा प्रणाली ब्रिटिशों के अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शैली की शिक्षा फैलाने के उद्देश्य से प्रभावित थी, लेकिन इसने पारंपरिक भारतीय शैक्षिक प्रणालियों और स्थानीय आवश्यकताओं की अनदेखी की। उपनिवेशी शिक्षा नीति ने भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम थे।

### 1. English Education and Western Influence (अंग्रेजी शिक्षा और पश्चिमी प्रभाव)

The British introduced English as the medium of instruction, aiming to create a class

of educated Indians who could assist in administration and act as intermediaries between the British rulers and the Indian masses. The focus was on Western knowledge, including subjects like science, literature, and law, rather than on Indian culture or indigenous knowledge.

ब्रिटिशों ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य एक शिक्षित भारतीय वर्ग का निर्माण करना था जो प्रशासन में सहायता कर सके और ब्रिटिश शासकों और भारतीय जनता के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सके। ध्यान पश्चिमी ज्ञान पर था, जिसमें विज्ञान, साहित्य और कानून जैसे विषय शामिल थे, न कि भारतीय संस्कृति या स्वदेशी ज्ञान पर।

## 2. **The Wood's Dispatch (वुड्स डिपैच)**

The Wood's Dispatch of 1854 laid the foundation for a more structured education system. It recommended the establishment of schools and colleges, the promotion of vernacular languages in education, and the training of teachers. However, despite these recommendations, the focus remained on English education, and the colonial state did not significantly invest in the development of local languages or traditional education systems.

1854 का वुड्स डिपैच एक अधिक संगठित शिक्षा प्रणाली की नींव रखता है। इसमें स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना, शिक्षा में स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देना और शिक्षकों का प्रशिक्षण देने की सिफारिश की गई थी। हालांकि, इन सिफारिशों के बावजूद, ध्यान अंग्रेजी शिक्षा पर ही बना रहा, और उपनिवेशी राज्य ने स्थानीय भाषाओं या पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों के विकास में महत्वपूर्ण निवेश नहीं किया।

## 3. **Exclusion of Indian Traditions (भारतीय परंपराओं की उपेक्षा)**

The colonial education system deliberately ignored India's rich tradition of education, including ancient universities like Nalanda and Takshashila. The system marginalized indigenous knowledge systems such as Ayurveda, astronomy, and traditional arts. The emphasis on Western education led to a disconnect between educated Indians and their own cultural heritage.

उपनिवेशी शिक्षा प्रणाली ने जानबूझकर भारत की समृद्ध शैक्षिक परंपराओं को नज़रअंदाज़ किया, जिसमें नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय शामिल थे। इस प्रणाली ने आयुर्वेद, खगोलशास्त्र और पारंपरिक कलाओं जैसी स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को हाशिए पर डाल दिया। पश्चिमी शिक्षा पर जोर देने से शिक्षित भारतीयों और उनके सांस्कृतिक धरोहर के बीच एक दूरी बन गई।

## 4. **The Rise of Indian Nationalism (भारतीय राष्ट्रवाद का उदय)**

While the colonial education system served British interests, it also unintentionally laid the foundation for Indian nationalism. Educated Indians began to recognize the inequalities and injustices of British rule. Many prominent leaders of the independence movement, such as Rabindranath Tagore, Lala Lajpat Rai, and Subhas Chandra Bose, were products of this system, using their education to challenge colonial rule.

जबकि उपनिवेशी शिक्षा प्रणाली ब्रिटिशों के हितों की सेवा करती थी, इसने अनजाने में भारतीय राष्ट्रवाद की नींव भी रखी। शिक्षित भारतीयों ने ब्रिटिश शासन की असमानताओं और अन्यायों को पहचानना शुरू किया। स्वतंत्रता संग्राम के कई प्रमुख नेता, जैसे रवींद्रनाथ ठाकुर, लाला लाजपत राय, और सुभाष चंद्र बोस, इस प्रणाली के उत्पाद थे, जिन्होंने अपनी शिक्षा का उपयोग उपनिवेशी शासन को चुनौती देने के लिए किया।

## 5. **Limited Access to Education (शिक्षा तक सीमित पहुँच)**

Despite the expansion of education under British rule, it was still limited to a small section of society. The education system primarily served the upper classes, while the

majority of Indians, especially in rural areas, had little or no access to schooling. The colonial education policy was not designed to uplift the masses but to create a class of clerks and administrators for the colonial government.

ब्रिटिश शासन के तहत शिक्षा के विस्तार के बावजूद, यह समाज के एक छोटे हिस्से तक ही सीमित था। शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से उच्च वर्गों की सेवा करती थी, जबकि भारतीयों का अधिकांश हिस्सा, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, स्कूलिंग तक बहुत कम या कोई पहुँच नहीं रखता था। उपनिवेशी शिक्षा नीति का उद्देश्य जनसंख्या का उत्थान नहीं था, बल्कि उपनिवेशी सरकार के लिए एक क्लर्क और प्रशासक वर्ग का निर्माण करना था।

In conclusion, the education policy of the colonial state in India was shaped by the British desire to control and exploit India for their benefit. While it led to the growth of a small educated class, it largely ignored the needs of the masses and the rich cultural heritage of India. The legacy of the colonial education system had long-lasting effects on the Indian education system and society, both positive and negative.

अंत में, उपनिवेशी राज्य की शिक्षा नीति भारत में ब्रिटिशों की नियंत्रण और शोषण की इच्छा से आकारित थी। जबकि इसने एक छोटे शिक्षित वर्ग के विकास को बढ़ावा दिया, यह मुख्य रूप से जनसंख्या की आवश्यकताओं और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की अनदेखी करती थी। उपनिवेशी शिक्षा प्रणाली की धरोहर का भारतीय शिक्षा प्रणाली और समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों था।

**Link of other parts is in description**

**Follow channel on whatsapp for updates**

**Pdf website : [hindustanknowledge.com](http://hindustanknowledge.com)**